कैदी और कोकिला

2- क्यों हूक - - - - - - - बोलो तो।

भावार्थ :- कवि जेल की कोठरी से, कोयल को संबोधित करते हुए कहता है कि हे कोयल। तू किस कसक भरी वाणी में कूक रही है? ऐसी कौन-सी बात है, जिसका बोझ तुम्हारी वेदनापूर्ण वाणी में स्पष्ट दिखाई पड़ता है। हे कोयल। तुम्हारा ऐसा क्या लुट गया, जिसको लेकर तुम इतनी व्याकुल हो और आधी रात को तुम्हारी वाणी इतनी दुःख भरी हो रही है? हे कोयल! तुम्हारी वाणी अत्यंत मधुर एवं कोमल है तथा वह मधुर ऐश्वर्य की प्रतीक है, जिसकी तुम स्वामिनी हो, फिर भी तुम इस सीमा तक विचलित क्यों हो? तुम्हारी वाणी में यह बेचैनी क्यों है?

तुम इस आधी रात को क्यों चिल्ला रही हो? क्या किसी जंगल की आग की भयानक लपटें तुम्हें दिख गई हैं अर्थात क्या तुम्हें भी इस अंग्रेजी-राज का अंधकार और भयानक अत्याचार युक्त नीतियों का ज्ञान हो गया है। तुम्हारी वाणी की व्याकुलता क्या इसी कारण है?

3- क्या? देख - - - - - - बोलो तो।

भावार्थ :- कवि कोयल से कहता है कि हे कोयल! क्या तुम्हें हमारे शरीर पर पड़ी हुई जंजीरें दिखाई नहीं पड़ती? ये जंजीरें हमें किसी गहने से कम प्रतीत नहीं होतीं और ये जो हथकड़ियाँ हमने पहन रखी हैं, ये अंग्रेज़ी राज द्वारा हमें

DATE : / 20
PAGE No

दिया गया उपहार है, जो गहनों के रूप में हमारे शरीर और हाथों में सजी हुई हैं। हमें ये कोल्हू के चरखा को खींचते समय चर्खा चूँ की ध्वनि में जीवन की तान सुनाई पड़ती है।

यह जीवन संगीत ही हमें देश के प्रति समर्पित होने की प्रेरणा देता है। हम अपने मजबूत हाथों से जब पत्थर तोड़ते हैं, तो ऐसा लगता है कि हमारी अँगुलियों में पत्थर के ये टुकड़े स्वतंत्रता-संग्राम का नया गीत रच रहे हैं। कवि कहता है कि जब मैं पेट पर कोल्हू का जुआ लगाकर कोल्हू का चरखा खींचता हूँ, तो ऐसा लगता है कि अंग्रेजी शासन की अकड़ या घमंड का कुआँ लगातार खाली करता जा रहा है। इससे मेरे अंदर उत्साह का नया संचार होता है अर्थात अंग्रेजों द्वारा दी जाने वाली यातनाएँ, हमें जीवन में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देता है।

कवि कहता है कि हे कोयल! इस अंधकार मय एवं शांत माहौल में तुम क्यों विलाप कर रही हो? तुम्हें ज्ञात है कि दिन का समय परिश्रम, यातना, संघर्ष का समय होता है, उस समय मधुर आवाज और करुणा की आवश्यकता नहीं होती। इसलिए तुम्हारा रुदन इस घोर अंधकार को बेध रहा है। हे कोयल! क्या तुम इन अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति का सूत्रपात कर रही हो? क्या तुम अपनी करुण वाणी से स्वतंत्रता-संग्राम का नया अध्याय लिखने जा रही हो? बोलो तो कोयल! क्या तुम इस नीरव, शांत, अंधकारमय वातावरण में इसीलिए चुपचाप रुदन कर रही हो?